रिकार्डः—ले लो दुआएँ माँ—बाप की..... ॐ पिताश्री 12/6/62
ओमशान्ति। बच्चों को मंत्र देना का अर्थ तो सुनाया है। मनमनाभव अर्थात् परमपिता प॰ जिसको भारतवासी गाते हैं तुम मात—पिता, हम बालक तेरे, त्वमेव माताश च पिता..... यह सिर्फ एक परमपिता प॰ को ही कहा जाता है। ऐसे तो नहीं; लौकिक घर में बाप को बच्चे कहेंगे त्वमेव माताश च पिता.... यह तो मंदिरों में जाकर महिमा करते हैं। जिसने भारत को स्वर्ग बनाया। भारत को 21 जन्मों लिए सुख मिला। पहले2 नये को भी अच्छी रीत समझाना चाहिए। तुमको बहुत कहते हैं घरबार क्यों छोड़ते हो; परन्तु नहीं, अपना तो है ही प्रवृत्तिमार्ग। निवृत्तिमार्ग वाले सन्यासी लोग वैराग दिलाते हैं, कहते हैं स्त्री नागिन है अथवा यह कागविष्टा समान सुख है। बाबा ने समझाया है सन्यास भी दो प्रकार का है। एक तो सन्यास है वैराग मार्ग वालों का। ज्ञान, भक्ति और वैराग। तीन अक्षर कहते हैं। अभी ज्ञान और भक्ति है संसार के लिए। हमारा ..... दूसरे धर्म वालों से ताल्लुक ही नहीं। जैसे क्राइस्ट की नॉलेज क्रिश्चियन्स को मिलती है। यह नॉलेज भी भारतवासियों लिए है। तुम बच्चों को यह नॉलेज मिलती है जिसे तुम देवी—देवता बनते हो। डीटीज़्म धर्म की स्थापना फिर से हो रही है। कलियुग के बाद है सतयुग। जैसे ..... में दिन होता है। सतयुग में भारत में सभी पवित्र थे। कलियुग में सभी अपवित्र हैं। सिर्फ सन्यासी घरबार छोड़ते हैं। उनका रजोगुणी सन्यास कहा जाता है। ड्रामा में उस रजोप्रधान सन्यास की भी नूँध है। शंकराचार्य द्वारा उस धर्म की स्थापना होती है। फिर उनकी वृद्धि हो जाती है। भारतवासी सतयुग आदि में था ल॰ना॰ का राज्य और कलियुग अन्त में है विकारी राज्य। वो निर्विकारी और यह विकारी। अच्छा विकारियों में भी फिर सन्यासी निर्विकारी बनते हैं; क्योंकि घरबार छोड़ कर ही योग का सन्यास करते हैं। वो है ही सन्यासियों के लिए। ऐसे नहीं गृहस्थी जो गुरु बनाते हैं तो कोई पवित्र हैं। ऐसे बहुत फॉलोअर्स उनके ढेर हैं। सभी थोड़े ही सन्यासी बनते। पवित्र थोड़े ही बनते हैं। सिर्फ कह देते हैं हम फलाणे के फॉलोअर्स हैं। ढेर के ढेर गुरु हैं; परन्तु वो सभी हैं पतित। कलियुग है ही पतित दुनिया। सतयुग है ही पावन दुनिया। वहाँ स्त्री—पुरुष दोनों पवित्र रहते हैं। तो जज कहते हैं घरबार क्यों छोड़ते हो? बोलो, सन्यासी क्यों छोड़ते हैं, यहाँ तो सिर्फ पवित्र बनते हैं। देवताओं की पवित्र राजधानी स्थापन होती है तो इस माँ—बाप की दुआएँ मिलती हैं। जि(स)से तुमको 21 जन्मों का सुख मिलता है। सहजयोग, सहज ज्ञान से माया पर जीत पहनते हैं। सन्यास की बात नहीं। बाप आकर माया पर जीत पहन जगतजीत बनाते हैं। भारतवासियों का देवी—देवता धर्म यहाँ महान पवित्र था। ब्राह्मण, क्षत्रिय फिर वैश्य, शूद्र। अब फिर ब्राह्मण बनना है। तो अभी तुम जानते हो उस सन्यास में घरबार आदि सभी छोड़ते हैं। वो ऐसे कभी नहीं कहेंगे कि तुम एवर हेल्दी, एवर वेल्दी बनेंगे। आजकल तो वो भी अन्दर घुस पड़े हैं। माताओं से भी अपने चर्ण दबवाते हैं। भगवान ने तो खुद आए द्रौपदी के चर्ण दबाए थे। यह फिर माताओं से अपने चर्ण दबाते हैं। बाबा कहते हैं तुम माताएँ बहुत थकी हुई हो। आधा कल्प भक्ति में धक्के खाए हैं, थक गए हो। उन्हों का है रजोप्रधान सन्यास। यह है सतोप्रधान। सतयुग में महान पवित्र, निरोगी थे। कभी बीमारी होती नहीं। स्वर्ग तो फिर क्या। भारत की आयु एवरेज 150 वर्ष थी। योग से आयु बढ़ती है। अब बाप कहते हैं मुझ परमपिता प॰ को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। मेरे को याद करते अन्त मते सो गते हो जावेगी। इसको कहा जाता है निराकार भगवानुवाच्य साकार द्वारा। तो यह भी पतित है ना। तुम बच्चों को सिद्ध कर बताना है। यहाँ कोई भी पावन नहीं हो सकता। नहीं तो गंगा—स्नान करने की क्या दरकार है। खुद ही पतित है फिर किसको गति—सद्गति कैसे दे सकते। सतयुग में भारत सदगति में था। अभी दुर्गति में है। भारत मालामाल था। गृहस्थ आश्रम, धर्म महान

पवित्र था। अभी तो एक/दो पर काम कटारी चलाते रहते हैं। वो लौकिक माँ–बाप कोई दुआएँ नहीं देते, वो तो और ही श्राप देते हैं। अल्पकाल क्षणभंगुर सुख लिए दो पैसे वर्से में दे देते हैं। बेहद का बाप तो देखो क्या वर्से में दे रहे हैं। 21 जन्मों के लिए सूर्यवंशी–चंद्रवंशी राजधानी मिलती है। यह है संगमयुग। ब्राह्मण कुल बहुत छोटा कुल है। दिखलाते हैं आयरन एज्ड पर्वत को गोल्डन एज्ड बनाया तो उनकी भुजा हो... है। ..... में सभी थोड़े ही मदद करते हैं। गाँधी को सारा भारत थोड़े ही मदद करते थे। कोई जास्ती करते तो कोई कम। जिन्होंने जास्ती मदद की वह आज मौज उड़ाए रहे हैं। खटमल गवर्मेंट प्रजा का खून पीती रहती है। इसको कहा जाता है डेविल वर्ल्ड। देवताओं की डीटी वर्ल्ड थी। देखो, यह कितनी बड़ी हॉस्पिटल है जि(स)से बाबा 21 जन्मों लिए एवर हेल्दी, एवर वेल्दी बनाते हैं। रूह को इनजेक्शन लगते हैं। बाबा ने माताओं को कलश दिया है। तुम सभी की आत्माओं को इनजेक्शन लगाओ। तो यह बड़ी हॉस्पिटल भी ठहरी जि(स)से तुम एवर हेल्दी बनते हो। बाकी सभी है अल्पकाल सुख के लिए। बाबा तुमको ऐसा योग सिखलाते हैं जि(स)से तुम एवर हेल्दी बनते हो। बाकी सभी है अल्पकाल के सुख के लिए। बाबा तुमको ऐसा योग सिखलाते हैं जि(स)से तुम 21 जन्म निरोगी बनते हो। यह राजयोग परमपिता प॰ के सिवाय कोई सिखला न सके। गीता को खण्डन करने कारण सर्वव्यापी का ज्ञान निकल आया है। नहीं तो गीता में बीज और झाड़ का सारा राज़ है। सृष्टि तो यह फिरती रहती है। तो ड्रामा को भी जानना चाहिए। वो तो कह देते यह सभी कल्पना है। जगत ही नहीं है। आत्मा निर्लेप है। इसलिए भल सब खाओ–पियो, मौज करो। सभी भगवान के रूप हैं। जिधर देखो उधर तू ही तू है। अभी तुम जानते हो कि आत्मा ही आयरन एज्ड बनी है। ..... में ही खण्ड धरती है ना। तो आत्मा ही आयरन एज्ड बनी है। आत्मा में ही शुद्ध और अशुद्ध संस्कार भरते हैं। यह बाबा समझा रहे हैं, तुम इन कानों से सुनते हो। कहते हैं मैं इस मुख से सुनता हूँ। तुम इन कानों से सुनते हो। मैं तुम्हारा ओबीडियेंट सर्वेंट हूँ। आया हूँ वापिस ले जाने। अभी सैम्पलिंग लगाते हैं दैवी झाड़ की। वो जो धर्म प्रायःलोप है। यह वरणों का चक्र भी तुम जानते हो। ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। हम चक्कर लगाते हैं। परमपिता प॰ कहते हैं मैं आया हुआ हूँ ब्राह्मण धर्म की स्थापना कर रहा हूँ। ब्राह्मणों को पढ़ाये कर फिर देवता बनाऊँगा। जो पास होंगे वो सूर्यवंशी बनेंगे। माया पर जीत नहीं पहन सकते उनको क्षत्रिय कहा जाता है। बाकी यह बाण आदि निशानी दी हैं। अभी तुम शूद्र से ब्राह्मण बने हो। फिर सो देवता बनेंगे। और सभी मुक्तिधाम चले जावेंगे। तुम बच्चियाँ कितनी सेवा करती हो। एक2 को श्रृंगारती हो, जैसे भ्रमरी का मिसाल है। तुम यह ज्ञान–योग की भू2 करते हो। मनुष्य बिल्कुल कीड़े मिसल बने हुए हैं। तुम बच्चे यहाँ आते हो बेहद बाप से 21 जन्मों का सुख लेने। मित्र–संबंधियों आदि को भी तुम राय देते हो। जिन्होंने कल्प पहले वर्सा लिया होगा, जो सिकीलधे होंगे वो ही अभी निकलेंगे। तुम भारतवासियों को पहले2 सुख के संबंध में भेजा फिर माया ने दुख में लाया। अभी फिर तुमको माया से लिबरेट कर शान्तिधाम ले जाऊँगा फिर सुख के संबंध में भेजूँगा। भल हम कितने भी शास्त्र पढ़े हैं। याद भी है, भूल तो नहीं सकते हैं ना; लेकिन अभी बाबा कहते हैं मैं जो सुनाता हूँ तुमको, वो सुनो। इन शास्त्रों में सभी झूठ ही झूठ है। भारत का नाम ही बदनाम कर दिया है। भारत को ही सच खण्ड, बहिष्त, इन्द्रप्रस्थ कहते थे। कोई को भी ... है 5000 बरस पहले सतयुग था। अभी यह तुम्हारी मशीन बाहर भी जावेगी। कम खर्च बाला नशीन। यह यूनिवर्सिटी कितनी बड़ी है; परन्तु इनमें खर्चा कुछ नहीं। सिर्फ तीन पैर पृथ्वी के लेते हैं। तुम नर को ना॰, नारी को ल॰ 21 जन्मों लिए सदा सुखी बनते हैं। यह है गॉड फादर की मशीन हेविन स्थापन करने लिए। कल्प पहले भी पार्ट बजाया है। वो ही रिपीट हो रहा है। दिखलाते हैं ना असुर हारे

पाण्डवों की विजय हुई। तुम्हारे हाथ में कुछ भी नहीं है। कोई खर्चा नहीं। कम खर्च बाला नशीन। सिर्फ बीज और झाड़ को जानना है, कैसे यह झाड़ उत्पन्न हो वृद्धि को पाता है। अभी जड़जड़ीभूत है। अभी तुम ..... सामने सा॰ करते हो। इसमें खर्चा कुछ भी नहीं। मनुष्य कितने कॉलेज, हस्पतालें आदि खोलते हैं। कितना खर्चा करते हैं। समझते हैं यह भी दान है। बरोबर अल्पकाल के सुख देने लिए कुछ भी करते हैं तो दूसरे जन्म में अल्पकाल का सुख मिलेगा। अब तो यह दुनिया ही खलास होती है। हॉस्पिटल–कॉलेज आदि कुछ भी बनावेंगे वो तो टूट–फूट जानी है। बड़े ते बड़ी कॉलेज वा यूनिवर्सिटी तो यह खुल गई। जहाँ नर से ना॰ बनते हैं। गीता में है ना इस ज्ञान से तुम राजाओं का राजा बनेंगे। यह है ही राज्य योग। वो होता है बैरिस्टरी योग। इंजीनियरी योग। यह है राजयोग। पढ़ाने वाला है परमपिता प॰। कितनी सहज बातें हैं अब सब माया रावण जेल में ..... हैं, ... हैं। इनको लिबरेट तो ..... एक प॰ के कोई कर न सके वो ही पतित–पावन गाया हुआ है। तो कहते हैं मनमनाभव तुमको वाणी से परे जाना है। मैं गाइड बन आया हूँ तो उन कॉलेज–हॉस्पिटल .... में है अल्पकाल का सुख और इसमें है 21 जन्मों का शुरू। रात–दिन का फर्क है ना। तुम वामन अवतार गाए हुए हो ..... योगबल से सृष्टि का राज्य भाग्य प्राप्त होता है वो है बाहूबल से अल्पकाल के लिए राज्य–भाग्य लेना। तुम तो सृष्टि के मालिक बनते हो। सृष्टि का मालिक देवताओं के सिवाय कोई बन न सके। लॉ नहीं कहता है। गाया भी हुआ है इन दोनों को आपस में बड़ा ....ण। भारत को दे देते हैं। यह वो ही कौरव, वो ही पाण्डव हैं। यह बातें समझने की हैं। तुम्हारे लिए बहुत सहज है। तुम राजयोग हो, उठते–बैठते यह निश्चय रहना है हम आत्मा हैं। यह मेरा शरीर है। हम आत्मा इमार्टल है, शरीर मार्टल है। बाप कहते हैं तुमको मेरे पास आना है ..... करो। तो विकर्म भी विनाश हो जावेंगे। विकर्म विनाश होने का और कोई तरीका नहीं है सिवाय योगबल के। योग और ज्ञान ..... से विकर्म विनाश होते हैं और इनसे तुम राजाओं का राजा बनते हो। भारत कितना सुखी था। एवर हेल्दी, एवर वेल्दी थे। इन्होंने फिर .... रावण आदि बैठ दिखाए हैं। जैसी है दृष्टि वैसी है सृष्टि। तो अब तुम बच्चों को बेहद के बाप से आशीर्वाद मिलती है। जैसे लौकिक बाप से मिलती है; परन्तु जितना पढ़ेंगे इतना सुख देखेंगे। बाबा और क्या आशीर्वाद करेंगे। आशीर्वाद तो फिर अपने ऊपर करनी होती है। योग लगाने से तो विकर्म विनाश होंगे। बाबा कहते हैं योग लगाने से तुम स्वयं पापों से मुक्त होंगे। अभी तो रावण राज्य है ना। राम राज्य भगवान ही स्थापन करेंगे कि पतित मनुष्य? नर्क में सभी नर्कवासी ठहरे। स्वर्ग में सभी स्वर्गवासी ठहरे। पुनर्जन्म स्वर्ग में ही लेंगे। इनका तो कोई नाम ही है रौरव नर्क। एक/दो को काटते रहते बिच्छू–टिण्डन जैसे मनुष्य पैदा होते हैं यह है मृत्युलोक। जहाँ आदि–मध्य–अन्त दुख पाते रहते हैं। ..... लोक में है आदि–मध्य–अन्त सुख। अभी तुम स्वर्ग के मालिक बन रहे हो। अभी बाबा कहते हैं बच्चे घर में एक कमरा लेकर यह रूहानी हस्पताल खोलो। लिख दो इस ज्ञान इनजेक्शन से 21 जन्मों लिए एवर हेल्दी, एवर वेल्दी बन जावेंगे। कितनी अच्छी मशीन है। इनमें ..... कुछ भी नहीं। कोई तकलीफ की बात नहीं है। सिर्फ मुझे याद करो और सुखधम को याद करो। परमधाम तो है एक शान्तिधाम, दूसरा सुखधाम और यह है दुखधाम। अभी तुम देवता बनते हो। हम सो देवता फिर शूद्र बने। अभी फिर हम सो देवता बनते हैं। यह है ..... हमसो सोहम का मंत्र। यह अक्षर ही तुम्हारे लिए है। उन्होंने फिर हम आत्मा सो प॰, प॰ सो आत्मा कह दिया है। सर्वव्यापी के ज्ञान ने भारत को एकदम नास्तिक बना दिया है। नास्तिक माना निर्धण के। सभी निर्धणके नास्तिक हैं। एक भी आस्तिक नहीं। आस्तिक बनाने वाला है बाबा। उनसे ही सुख घनेरे मिलती है। तुम कह सकते हो हम नर्क को स्वर्ग बनाते हैं। कलियुग को स्वर्ग तो कोई कह न सके। अच्छा, ॐ